१. कह कविराय

–गिरिधर

संभाषणीय

विपत्ति में ही सच्चे मित्र की पहचान होती है, स्पष्ट कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से उनके मित्रों के नाम पूछें । ● विद्यार्थी किसे अपना सच्चा मित्र मानते हैं, बताने के लिए कहें । ● किन–किन कार्यों में मित्र ने उनकी सहायता की है, पूछें । ● विद्यार्थी अपने–अपने मित्रों के सच्चे मित्र बनने के लिए क्या करेंगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय ।
जैसे कागा–कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ।।
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊ के एक रंग, काग सब भये अपावन ।।
कह गिरिधर कविराय, सुनौ हो ठाकुर मन के ।
बिन गुन लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के ।।

देखा सब संसार में, मतलब का व्यवहार ।
जब लगि पैसा गाँठ में, तब लगि ताको यार ।।
तब लगि ताको यार, यार सँग ही सँग डोलै ।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहि, बोलै ।।
कह गिरिधर कविराय, जगत का ये ही लेखा ।
करत बेगरजी प्रीति, मित्र कोई बिरला देखा ।।

झूठा मीठे वचन कहि, ऋण उधार ले जाय ।
लेत परम सुख ऊपजै, लैके दियो न जाय ।।
लैके दियो न जाय, ऊँच अरु नीच बतावै ।
ऋण उधार की रीति, माँगते मारन धावै ।।
कह गिरिघर कविराय, जानि रहै मन में रूठा ।
बहुत दिना हो जाय, कहै तेरो कागज झूठा ।।

परिचय

जन्म : एक अनुमान के अनुसार इनका जन्म १७१३ ई. में हुआ था ।

परिचय : गिरिधर की कुंडलियाँ बहुत प्रसिद्‌ध हैं । इन्होंने नीति, वैराग्य और अध्यात्म को ही अपनी रचनाओं का विषय बनाया है । जीवन के व्यावहारिक पक्ष का इनकी रचनाओं में प्रभावशाली वर्णन मिलता है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गिरिधर कविराय ग्रंथावली' में ५०० से अधिक दोहे और कुंडलियाँ संकलित हैं ।

पद्‌य संबंधी

कुंडली : यह दोहा और रोला के मेल से बनती है । कुंडली में दोहा के अंतिम पद को रोला का पहला चरण बनाना होता है । कुंडलियों की एक विशेषता यह है कि यह जिस शब्द से शुरू होती है उसी से इसका समापन भी होता है ।

यहाँ कुंडलियों के माध्यम से विविध सामाजिक गुणों को अपनाने की बात की गई है ।

बिना विचारे जो करै, सो पाछै पछताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै ।
खान-पान-सनमान, राग-रंग मनहि न भावै ।।
कह गिरिधर कविराय, दुख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना विचारे ।।

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ ।।
ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै ।।
कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती ।
आगे की सुधि लेइ, समझु बीती सो बीती ।।

* पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम ।
दोनों हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ।।
यही सयानो काम, राम को सुमिरन कीजै ।
परस्वास्थ के काज, शीस आगे कर दीजै ।।
कह गिरिधर कविराय, बड़ेन की याही बानी ।
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी ।।

—०—

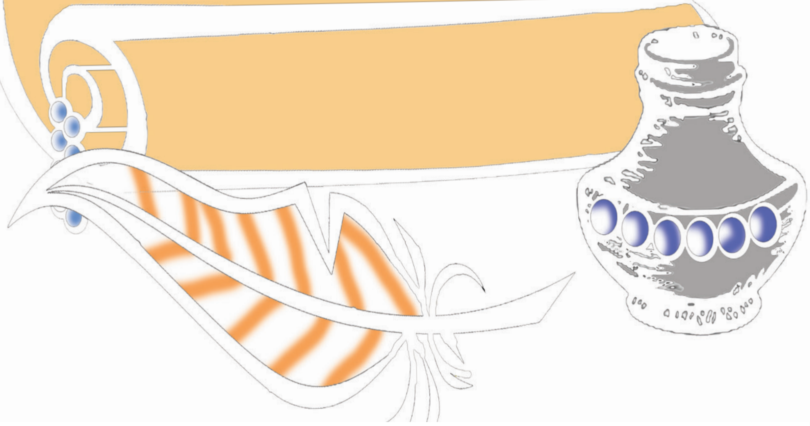

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :
(१) संजाल :

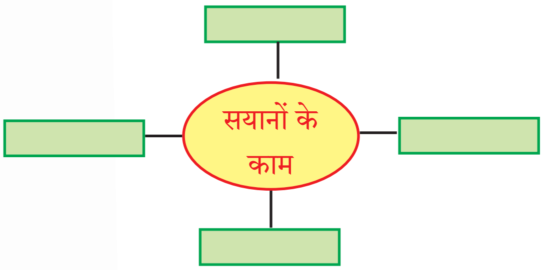

(२) उत्तर लिखिए :
(क) अपना शीस इसके लिए आगे करना चाहिए तो इसकी प्राप्ति होगी
(ख) बड़ों के द्‍वारा दी गई सीख-
(३) 'हाथ' शब्द पर प्रयुक्त कोई एक मुहावरा लिखकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए ।
(४) 'खुशियाँ बाँटने से बढ़ती हैं' इसपर अपना मत स्पष्ट कीजिए ।

श्रवणीय

संत कबीर तथा कवि बिहारी के नीतिपरक दोहे सुनिए और सुनाइए ।

पठनीय

मीरा का कोई पद पढ़िए ।

शब्द संसार

सहस (सं.पुं.) = सहस्र
दोऊ (वि.) = दोनों
ताको (सर्व.) = उसको
लेखा (पुं.सं) = व्यवहार
बेगरजी (वि.फा.) = निस्वार्थ
विरला (वि.) = निराला
लैके (क्रिया.) = लेकर
अरु (अ.) = और
टारना (क्रिया.) = टालना
परतीती (स्त्री.सं.) = प्रतीति, विश्वास

आसपास

भक्तिकालीन, रीतिकालीन कवियों के नाम और उनकी रचनाओं की सूची तैयार कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'गुन के गाहक सहस नर ' इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :-

(क) कौआ और कोकिल में समानता तथा अंतर :

	समानता	अंतर	कवि की दृष्टि से
कौआ			
कोकिल			

(ख) कवि की दृष्टि से मित्र की परिभाषा-

(१)
(२)
(३)
(४)

(ग) आकृति

बिना सोचे काम करने के परिणाम

[ ] [ ] [ ] [ ]

(२) कविता में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों का चयन करके उनका वर्गीकरण कीजिए तथा पाँच शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(३) कवि के मतानुसार मनुष्य की विचारधारा निम्न मुद्दों के आधार पर स्पष्ट कीजिए :

(च) ऋण लेते समय ....

(छ) ऋण लौटाते समय ....

8HZQ3V

लेखनीय

सामाजिक मूल्यों पर आधारित पद, दोहे, सुवचन आदि का सजावटी सुवाच्य लेखन कीजिए ।

पाठ से आगे

'बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ', कवि के इस कथन की हमारे जीवन में सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

रचना बोध

....
....
....